Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सावन सोमवार व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ शिवभक्त साहूकार की कथा ॥

सोमवार व्रत में सुनाई जाने वाली साहूकार और उसके पुत्र की प्रचलित लोककथा का सरल रूपांतरण। कुछ क्षेत्रों में कथा के प्रसंग अलग मिलते हैं।

किसी नगर में एक साहूकार अपनी पत्नी के साथ रहता था। घर में धन था, पर संतान न होने से दोनों दुःखी थे। साहूकार हर सोमवार शिवजी की पूजा करता और संध्या को मंदिर में दीप जलाता। पार्वती जी ने उसकी श्रद्धा देखकर शिवजी से उसके मन की बात पूछी।

लोककथा के अनुसार शिवजी ने उसे पुत्र का आशीर्वाद दिया, पर बताया कि बालक की आयु कम होगी। समय आने पर घर में पुत्र जन्मा। माता-पिता ने उसे बहुत प्रेम से पाला और शिक्षा दी। जब वह बड़ा हुआ तो साहूकार ने उसे अपने मामा के साथ काशी पढ़ने भेजा।

मामा-भांजा मार्ग में लोगों की सहायता करते और पूजा में भाग लेते हुए काशी पहुँचे। बालक ने मन लगाकर पढ़ाई की। एक दिन अचानक उसकी तबीयत बिगड़ी और वह निश्चेष्ट हो गया। मामा ने बड़ी चिंता से उसे सँभाला और भगवान शिव का स्मरण किया।

कथा में आता है कि शिव-पार्वती वहाँ से गुज़रे। पार्वती जी ने बालक को देखकर करुणा व्यक्त की और शिवजी से उसके लिए कृपा की प्रार्थना की।

॥ शिव-पार्वती की कृपा ॥

शिवजी ने साहूकार की श्रद्धा और परिवार के दुःख का स्मरण किया। पार्वती जी के आग्रह पर उन्होंने बालक को पुनः जीवन का आशीर्वाद दिया। जब बालक उठा तो मामा को गहरा संतोष हुआ। उन्होंने शिव-पार्वती को प्रणाम किया और परिवार को शुभ समाचार देने की तैयारी की।

शिक्षा पूरी करके बालक मामा के साथ अपने घर लौटा। साहूकार और उसकी पत्नी ने उसे देखकर प्रसन्नता से शिवजी का धन्यवाद किया। परिवार ने सोमवार की पूजा जारी रखी और अपनी सामर्थ्य से दूसरों के साथ सुख बाँटने का प्रयास किया।

कथा का भाव

इस लोककथा में श्रद्धा, आशा और करुणा का भाव है। इसे किसी बच्चे की बीमारी या परिवार के दुःख के लिए उपवास की कमी को दोष देने का आधार न बनाएं। अस्वस्थता की स्थिति में समय पर चिकित्सा सहायता लेना आवश्यक है।

सावन में कथा-पाठ

सावन सोमवार को शिव पूजा के बाद यह कथा पढ़ी या सुनी जाती है। घर में प्रचलित कोई दूसरा सोमवार-व्रत कथारूप हो तो वह भी श्रद्धा से अपनाया जा सकता है। कथा के अंत में सभी के स्वास्थ्य और सुख की प्रार्थना करें।

॥ हर हर महादेव ॥